आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-24, अंक-12 दिसम्बर 2010

इस अंक में

- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद : गौरवपूर्ण 100 वर्ष 89
- परिषद की वित्तीय सहायता से से संपन्न संगोष्ठियां/सेमिनार/ कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन 94
- परिषद के समाचार 95

संपादक मंडल

अध्यक्ष — डॉ विश्व मोहन कटोच
महानिदेशक
भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद
एवं सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग

सदस्य — डॉ ललित कान्त
डॉ बेला शाह

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग — डॉ के. सत्यनारायण

संपादक — डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय
डॉ रजनी कान्त

प्रकाशक — श्री जगदीश नारायण माथुर

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद : गौरवपूर्ण 100 वर्ष

बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में ब्रिटिश शासन काल के दौरान भारत जैसे विशाल देश में विभिन्न पारिस्थितिकीय स्थितियों एवं जातीय विविधताओं के साथ-साथ मलेरिया, फाइलेरिया, हैज़ा, प्लेग, कालाज़ार जैसे खतरनाक रोगों ने भी अपने पैर पसार रखे थे तथा अधिकांश आबादी गरीबी, भुखमरी एवं कुपोषण से पीड़ित थी। देश में स्वास्थ्य सुविधाएं अत्यधिक सीमित थीं तथा आयुर्विज्ञान अनुसंधान का लगभग अभाव सा था और भारत से किसी भी प्रमुख मेडिकल जर्नल का प्रकाशन नहीं हो रहा था।

धीरे-धीरे भारतीय चिकित्सा सेवा (IMS) की शुरुआत के साथ-साथ भारत में पाश्चर ट्रीटमेन्ट की स्थापना तथा वर्ष 1905-06 के दौरान कसौली, हिमाचल प्रदेश में सेन्ट्रल रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना के साथ भारत में चिकित्सा अनुसंधान की नींव पड़ी। कुछ ही वर्षों में बॉम्बे बैक्टीरियोलॉजिकल लेबोरेटरी (अब हॉफ़किन संस्थान), परेल, मुम्बई, मद्रास प्रेसीडेन्सी के लिए गिण्डी स्थित किंग इंस्टीट्यूट तथा कसौली, कुन्नूर, शिलांग एवं रंगून स्थित पाश्चर इंस्टीट्यूट की स्थापना के साथ भारत में आयुर्विज्ञान अनुसंधान को बढ़ावा दिया गया। साथ-साथ भारत में कार्यरत ब्रिटिश सेना के मेजर जनरल सर रोनॉल्ड रॉस द्वारा मच्छरों से मलेरिया संचरण की उल्लेखनीय खोज के पश्चात मलेरिया, जो भारत में एक गंभीर समस्या बनी हुई थी, के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय शोध कार्य का प्रारम्भ हुआ।

इंडियन रिसर्च फण्ड एसोसिएशन (IRFA) की स्थापना एवं कार्य का विस्तार

चिकित्सा अनुसंधान के क्षेत्र में दिनांक 15 नवम्बर, 1911 एक महत्वपूर्ण दिन था, जब *इंडियन रिसर्च फण्ड एसोसिएशन* (IRFA), की स्थापना हुई। कुल 5 लाख रुपए के अल्प बजट के साथ IRFA ने कार्य करना प्रारम्भ किया। एसोसिएशन का मुख्य उद्देश्य संचारी रोगों में अनुसंधान को बढ़ावा देना था, किन्तु प्रथम विश्व युद्ध के कारण कार्य बाधित होते रहे तथा कालाज़ार एवं हैज़ा के क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए सकारात्मक कदम उठाए गए।

इंडियन रिसर्च फण्ड एसोसिएशन के अंतर्गत शुरुआती प्रयोगशालाओं में शामिल थीं: पोषण अनुसंधान

IRFA के अंतर्गत गठित विभिन्न इंक्वाइरीज़

- बेरी-बेरी इंक्वाइरी
- क्वीनाइन एवं मलेरिया इंक्वाइरी
- कालाजार एन्सीलेरी इंक्वाइरी
- स्वदेशी औषधियों पर अनुसंधान
- पोषण विकारों पर अनुसंधान
- डेफीसिएन्सी डिसीज़ इंक्वाइरी

प्रयोगशाला, कुन्नूर (जिसे बाद में हैदराबाद में स्थानांतरित करके राष्ट्रीय पोषण संस्थान में परिवर्तित कर दिया गया), विषाणु अनुसंधान केन्द्र, पुणे (बाद में राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान) तथा यक्ष्मा अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई ।

बीसवीं शताब्दी के शुरुआती दशकों में देश की स्वास्थ्य समस्याओं पर जानकारी प्राप्त करने के लिए IRFA द्वारा अनेक इंक्वाइरी का गठन किया गया, जिनमें प्रमुख थीं: बेरी-बेरी इंक्वाइरी, क्वीनेन एवं मलेरिया इंक्वाइरी, कालाज़ार एन्सीलेरी इंक्वाइरी, डिफीसिएन्सी डिसीज़ इंक्वाइरी (वर्ष 1918-1920) तथा रिसर्च ऑन इंडीजीनस ड्रग्स एवं रिसर्च ऑन न्यूट्रीशन डिसआर्डर्स आदि । इनके अतिरिक्त संचारी एवं संक्रामक रोगों तथा कुपोषण जैसी समस्याओं पर भी उल्लेखनीय कार्य किए गए ।

वर्ष 1949 में IRFA की गतिविधियों का पुनर्गठन करके इसे भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद अर्थात् आई सी एम आर (ICMR) का नाम दिया गया । आई सी एम आर का उद्देश्य देश में जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान को बढ़ावा देना तथा भारत की स्वास्थ्य समस्याओं पर काबू पाने के लिए नवीनतम अनुसंधान के माध्यम से कारगर हल निकालकर राष्ट्रीय कार्यक्रम को सुदृढ़ बनाना था ।

आयुर्विज्ञान अनुसंधान में उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय शोध कार्य को पुरस्कृत करने के लिए वर्ष 1953 में कर्नल अमीर चन्द द्वारा 53,000 रुपए. के अंशदान के साथ आई सी एम आर पुरस्कारों की शुरुआत की गई ।

बाद के वर्षों में विभिन्न चरणों में आई सी एम आर अनुसंधान केन्द्रों/संस्थानों के एक नेटवर्क की स्थापना की गई, जो रोगोन्मुख

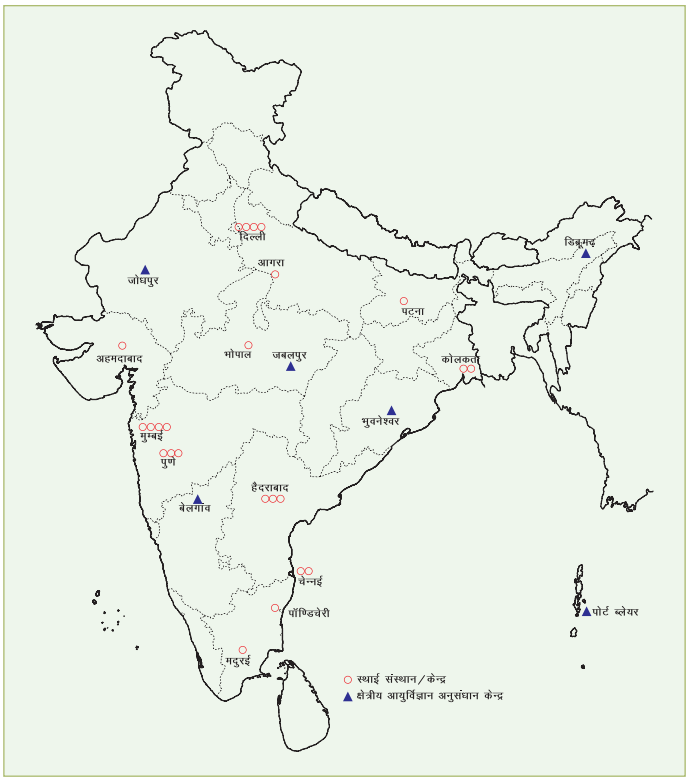

आई सी एम आर के संस्थानों का नेटवर्क

क्षेत्रों में कार्यरत हैं । वर्ष 1980 के दशक में क्षेत्रीय तथा जनजातीय समुदाय में व्याप्त स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान के लिए क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना की गई, जो भारत की विभिन्न क्षेत्रीय एवं जनजातीय सम्बद्ध स्वास्थ्य समस्याओं के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं । इनमें सिकिल कोशिका अरक्तता, जी 6 पी डी, अन्य आनुवंशिक कारकों, मलेरिया, लेप्टोस्पाइरारुग्णता तथा व्यावसायिक स्वास्थ्य समस्याएं आदि, सम्मिलित हैं ।

स्वास्थ्य चुनौतियां और आई सी एम आर की भूमिका

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान डी डी टी जैसे कीटनाशक की खोज तथा जनस्वास्थ्य कार्यक्रम में इसके प्रयोग के फलस्वरूप भारत सहित पूरे विश्व में मलेरिया की घटनाओं में आशातीत सफलता प्राप्त की गई, परन्तु 1970 के दशक में बढ़ते कीटनाशी प्रतिरोध, पर्यावरणी परिवर्तनों तथा विकासात्मक गतिविधियों के परिणामस्वरूप मलेरिया ने पुनः उभरना शुरू कर दिया और वर्ष 1976 में भारत में करीब 6.4 मिलियन केस रिकॉर्ड किए गए तथा मृत्यु की घटनाओं में भी वृद्धि दर्ज की गई । परिषद द्वारा राष्ट्रीय कार्यक्रम को अनुसंधान सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से वर्ष 1977 में मलेरिया अनुसंधान केन्द्र (अब राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान) की स्थापना की गई, जो मलेरिया के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान से संबद्ध है तथा मलेरिया को काबू में रखने में प्रयासरत है। वर्ष 1980 के दशक में एच आई वी/एड्स ने विश्व स्तर पर दस्तक दी तथा भारत भी इससे अछूता नहीं रहा । आई सी एम आर द्वारा पुणे में राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान की स्थापना की गई, जो एच आई वी/एड्स के विभिन्न पहलुओं पर कार्यरत है । हाल ही में पर्यावरणी स्वास्थ्य पर अनुसंधान एवं स्वास्थ्य प्रभाव आकलन के लिए भोपाल, मध्य-प्रदेश में राष्ट्रीय पर्यावरणी स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान नामक एक नवीन संस्थान की स्थापना की गई है । जहां एक ओर परिषद के विभिन्न भागों में स्थित 29 संस्थानों/केन्द्रों द्वारा इन्ट्राम्युरल अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाता है वहीं दूसरी ओर उन्नत अनुसंधान केन्द्रों, टास्क फोर्स अध्ययनों एवं तदर्थ

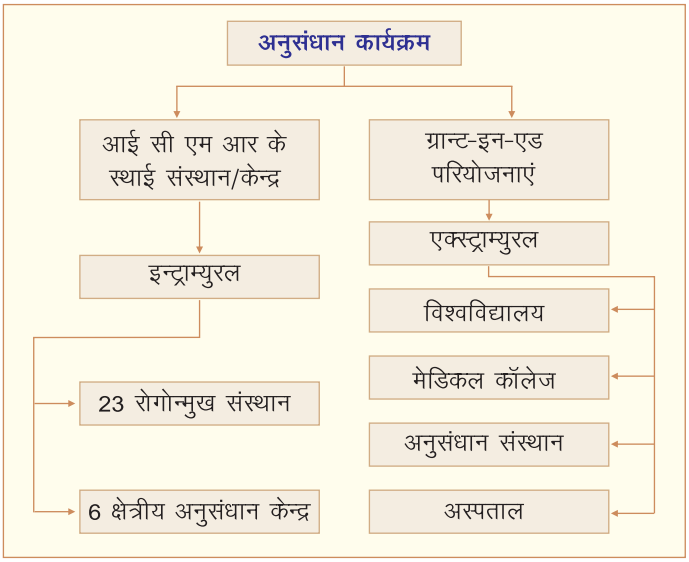

परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करके एक्स्ट्राम्युरल अनुसंधान को प्रोत्साहन दिया जाता है । विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों, विश्वविद्यालयों तथा मेडिकल कॉलेजों आदि में जारी अनुसंधान, जटिल स्वास्थ्य समस्याओं का कारगर हल निकालने में सहायक है। शोध कार्यों से प्राप्त नवीन जानकारी/ सूचना/इनोवेशन आदि का पेटेन्ट प्राप्त करने में भी परिषद द्वारा मार्गदर्शन दिया जाता है ।

अनुसंधान के अलावा परिषद द्वारा मानव संसाधन विकास के क्षेत्र में जूनियर रिसर्च फेलोशिप्स, सीनियर रिसर्च फेलोशिप्स के साथ-साथ अण्डर ग्रेजुएट मेडिकल स्टुडेन्ट्स में अनुसंधान प्रवृत्ति के विकास एवं उसकी समझ के लिए शॉर्ट-टर्म रिसर्च स्टुडेन्टशिप जैसे कार्यक्रम चलाए जाते हैं । इनके अलावा समय-समय पर विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं एवं पाठ्यक्रमों का भी संचालन किया जाता है ।

परिषद द्वारा देश में उत्कृष्ट अनुसंधान प्रयासों को सम्मानित करने के लिए आई सी एम आर पुरस्कार भी प्रदान किए जाते हैं । इन पुरस्कारों की संस्थापना वर्ष 1953 में कर्नल अमीर चन्द द्वारा 53,000 रुपए के अंशदान के साथ हुई तथा वर्तमान में विभिन्न श्रेणी एवं विषयों पर लगभग 35 पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं जिनमें से 11 पुरस्कार केवल युवा वैज्ञानिकों के लिए ही हैं । इन पुरस्कारों में 1 लाख रुपए का डॉ बी.आर.अम्बेडकर शताब्दी पुरस्कार तथा अल्प सुविधा प्राप्त समुदाय के वैज्ञानिकों एवं अल्पविकसित क्षेत्रों में कार्यरत वैज्ञानिकों के लिए प्रदान किए जाने वाले पुरस्कार भी शामिल हैं ।

देश में अनुसंधान कार्य का सुचारु रूप से संचालन हो, तथा लोगों के हितों को कोई क्षति न पहुंचे, इसे ध्यान में रखकर परिषद द्वारा अनेक दिशानिर्देशों का सृजन किया गया है जिनमें प्रमुख हैं : मानव को शामिल करते हुए जैव आयुर्विज्ञान अनुसंधान हेतु नीतिविषयक दिशानिर्देश, बौद्धिक सम्पदा अधिकार नीति, ड्राफ्ट सहायक प्रजनन प्रौद्योगिकी बिल-2010, बेहतर चिकित्सीय प्रयोगशाला व्यवहार हेतु दिशानिर्देश, मूलकोशिका अनुसंधान एवं चिकित्सा हेतु दिशानिर्देश आदि । साथ-साथ देश में चिकित्सीय परीक्षणों पर नजर रखने के लिए क्लीनिकल ट्रॉयल रजिस्ट्री की स्थापना की गई है जहां हर चिकित्सीय परीक्षण का पंजीकरण आवश्यक है ।

प्रकाशन, सूचना एवं संचार

परिषद द्वारा नियतकालिक तथा अनियतकालिक प्रकाशन भी प्रकाशित किए जाते हैं । इनमें भारत के प्राचीनतम जर्नलों में प्रमुख *इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च* का वर्ष 1913 से निरन्तर प्रकाशन हो रहा है । आज विश्व के प्रतिष्ठित मेडिकल जर्नलों में इसका प्रमुख स्थान है तथा प्रतिमाह इसका प्रकाशन होता है । इसके अतिरिक्त *आई सी एम आर बुलेटिन,* आई सी एम आर पत्रिका, *एन्युअल रिपोर्ट,* वार्षिक प्रतिवेदन के अलावा आई सी एम आर के संस्थानों/केन्द्रों द्वारा अनेक प्रकाशन प्रकाशित किए जाते हैं जिनमें पोषण के क्षेत्र में हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा प्रकाशित अनेक लोकप्रिय पुस्तकें तथा दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान केन्द्र द्वारा प्रकाशित *जर्नल ऑफ वेक्टर बोर्न डिसीज़ेस* एवं अन्य पुस्तकें शामिल हैं । इनका सम्पूर्ण विवरण एवं लिस्ट परिषद की वेबसाइट पर उपलब्ध है। परिषद की वेबसाइट (www.icmr.nic.in) पर अन्य महत्वपूर्ण सूचनाएं, विभिन्न दस्तावेजों के pdf, रोजगार के अवसर के अलावा परिषद द्वारा सहायता प्राप्त सेमिनार, संगोष्ठियों/ कार्यशालाओं आदि का विवरण भी उपलब्ध है ।

वर्ष 1913 में परिषद द्वारा *इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च* की शुरुआत की गई, जिसके साथ आयुर्विज्ञान अनुसंधान में एक नए युग का सूत्रपात हुआ तथा भारत में सम्पन्न अनुसंधान जो ब्रिटिश जर्नलों में प्रकाशित हो रहा था, भारत में प्रकाशित होने लगा और विगत 97 वर्षों में इस जर्नल ने दिनों-दिन उल्लेखनीय प्रगति की है । आज यह न केवल भारत बल्कि एशिया के प्रमुख जर्नलों में अग्रणी बना हुआ है ।

आपदा प्रबन्धन एवं स्वास्थ्य प्रभाव आकलन

परिषद द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य समस्याओं, आपदा प्रबंधन, महामारी आदि के दौरान केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों को सहायता प्रदान की जाती है । परिषद द्वारा भोपाल गैस त्रासदी, सुनामी, गुजरात भूकम्प प्रभावित आबादी एवं H1 N1 प्रकोप आदि जैसी सामयिक स्वास्थ्य समस्याओं पर उल्लेखनीय कार्य सम्पन्न किए गए हैं । इसके अतिरिक्त विकास संबंधी परियोजनाओं के कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों के आकलन (HIA) पर भी महत्वपूर्ण अध्ययन किए गए है जिनमें कोंकण रेलवे एवं सरदार सरोवर परियोजनाएं प्रमुख हैं ।

आई सी एम आर की यह यात्रा अब अपने 100वें वर्ष में प्रवेश कर गई है, तथा वर्ष भर चलने वाले शताब्दी समारोहों की शुरुआत 15 नवम्बर, 2010 को की गई ।

शताब्दी समारोह का शुभारम्भ

दिनांक 15 नवम्बर, 2010 को नई दिल्ली स्थित इंडिया इस्लामिक कल्चरल सेन्टर में आयोजित एक भव्य समारोह के

शताब्दी समारोह के शुभारम्भ के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए बाएं से दाएं श्री गांधी सेल्वन, श्री ग़ुलाम नबी आज़ाद एवं डॉ विश्व मोहन कटोच

आई सी एम आर के कुछ महत्वपूर्ण माइलस्टोन्स (उपलब्धियां)

1911	दिनांक 15 नवम्बर, 1911 को इंडियन रिसर्च फण्ड एसोसिएशन (IRFA) की प्रथम गवर्निंग बॉडी-(GB) की बैठक सर हरकोर्ट बटलर की अध्यक्षता में प्लेग लेबोरेटरी, मुम्बई में सम्पन्न
1913	इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आई जे एम आर) (प्रतिष्ठित जैवआयुर्विज्ञानी जर्नल) की शुरुआत
1942	कालाज़ार के संचरण चक्र की व्याख्या
1948	डॉ सी.जी.पंडित IRFA के फुल टाइम सचिव तथा तद्पश्चात (1949) प्रथम निदेशक नियुक्त
1957	विषाणु अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा कर्नाटक में क्यासानूर फॉरेस्ट डिसीज़ (KFD) की खोज
1960	आई सी एम आर मुख्यालय अंसारी नगर, स्थित वर्तमान भवन में स्थानांतरित
1970	मच्छरों के आनुवंशिकी नियंत्रण पर WHO-ICMR यूनिट की स्थापना
1971	कॉन्ट्रासेप्टिव टेस्टिंग यूनिट्स ($HRRC_s$) का देशव्यापी नेटवर्क
1971	आई सी एम आर बुलेटिन की शुरुआत
1972	नेशनल न्युट्रीशन मॉनीटरिंग ब्यूरो (NNMB) का गठन
1976	परिषद मुख्यालय में प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग की स्थापना
1979	बी.सी.जी. ट्रॉयल रिपोर्ट का आई जे एम आर में प्रकाशन (सप्लीमेन्ट जुलाई, 1980)
1981	अपर महानिदेशक की पोस्ट का सृजन तथा डॉ एस. श्रीरामाचारी पहले अपर महानिदेशक नियुक्त
1991	डॉ बी.आर. अम्बेडकर शताब्दी पुरस्कार की स्थापना
1994	डॉ जी.वी. सत्यवती परिषद की प्रथम महिला महानिदेशक नियुक्त
2002	आई सी एम आर जूनियर रिसर्च फेलोशिप की शुरुआत
2007	स्वास्थ्य मंत्रालय में एक नए स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डी एच आर) का गठन तथा आई सी एम आर के महानिदेशक को इस विभाग के सचिव का दर्जा

अन्तर्गत भारत के केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री माननीय श्री ग़ुलाम नबी आज़ाद द्वारा द्वीप प्रज्ज्वलन के साथ वर्ष भर चलने वाले शताब्दी समारोहों की शुरुआत की गई । इस अवसर पर बोलते हुए श्री आज़ाद ने भारत में प्राचीन काल में सुश्रुत एवं चरक के समय से मानव स्वास्थ्य के क्षेत्र में हो रहे उल्लेखनीय कार्यों तथा गौरवशाली पारम्परिक धरोहर के साथ-साथ वर्ष 1911 में आई सी एम आर (तब IRFA) की स्थापना और 100 वर्षों

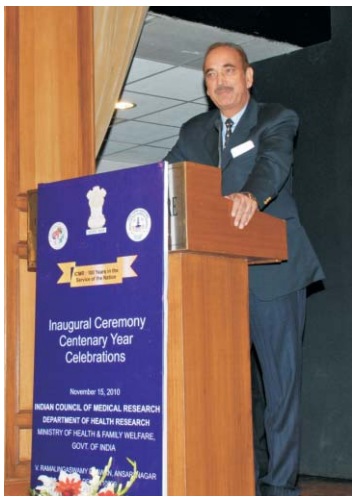

15 नवम्बर, 2010 को आयोजित समारोह के अवसर पर केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री ग़ुलाम नबी आज़ाद

की इसकी यात्रा एवं उपलब्धियों का वर्णन किया । उन्होंने परिषद के वैज्ञानिकों द्वारा आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट शोध कार्यों की प्रशंसा की तथा परिषद के वैज्ञानिकों को बधाई दी । श्री आज़ाद ने परिषद द्वारा हैज़ा, क्षयरोग, कुष्ठरोग, रोगवाहक नियंत्रण तथा अन्य रोगों के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय अनुसंधान कार्यों का उल्लेख किया तथा आशा व्यक्त की कि परिषद नवीन अनुसंधान को बढ़ावा देकर भावी चुनौतियों एवं देश की अन्य स्वास्थ्य समस्याओं पर नए हल निकालने के लिए प्रयासरत रहेगी ।

परिषद के महानिदेशक एवं सचिव, डी एच आर डॉ विश्व मोहन कटोच

इस अवसर पर केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री श्री गांधी सेलवन ने भी आई सी एम आर के अनुसंधान कार्यों तथा गौरवशाली इतिहास की चर्चा की और स्पष्ट किया कि आई सी एम आर द्वारा डेंगी, चिकनगुन्या तथा H1 N1 जैसी महामारियों, प्रकोपों के दौरान देश की हर संभव सहायता प्रदान की गई है । उन्होंने देश के विभिन्न भागों में स्थित आई सी एम आर के संस्थानों/केन्द्रों द्वारा क्षयरोग, कुष्ठरोग, मलेरिया, फाइलेरिया रोग, आदि के क्षेत्र में नवीन ज्ञान तथा तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराने में सराहनीय योगदान की चर्चा की । उन्होंने अनुसंधान परिणामों को जनसामान्य तक पहुंचाने एवं उन्हें लाभान्वित करने पर भी बल दिया ।

आईजेएमआर के आर्काइव पर निर्मित डीवीडी सेट का विमोचन

इस अवसर पर परिषद के महानिदेशक एवं स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डी एच आर) के सचिव डॉ विश्व मोहन कटोच ने भी आई सी एम आर के 100 वर्षों के कार्यों तथा उपलब्धियों का उल्लेख किया और आशा व्यक्त की कि इस वर्ष के दौरान हमें अपनी उपलब्धियों पर हर्ष एवं जश्न मनाने के साथ-साथ भावी चुनौतियों से निपटने तथा आगे बढ़ने की दिशा में सही कदम उठाने के लिए आत्मचिन्तन भी करना होगा । उन्होंने परिषद के पूर्व महानिदेशकों

सचिव, डी एच आर एवं महानिदेशक, आई सी एम आर डॉ विश्व मोहन कटोच के साथ परिषद के पूर्व महानिदेशक डॉ एस.पी.त्रिपाठी

की भी प्रशंसा की जिनके अथक प्रयासों के फलस्वरूप आई सी एम आर को नई दिशा प्राप्त हुई । उन्होंने परिषद के वैज्ञानिकों, तकनीकी तथा प्रशासनिक स्टाफ की भी सराहना की जिन्होंने परिषद को आगे बढ़ाने में सक्रिय योगदान दिया है । डॉ कटोच ने वर्ष भर चलने वाले इन कार्यक्रमों के अंतर्गत होने वाली प्रमुख गतिविधियों से भी लोगों को अवगत कराया ।

इस अवसर पर माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री ग़ुलाम नबी आज़ाद द्वारा परिषद द्वारा तैयार तीन पुस्तकों यथाः *फाइटोकेमिकल रेफरेन्स स्टैण्डर्ड्स ऑफ सिलेक्टेड इंडियन मेडिसिनल प्लान्ट्स, INSEARCH इंडियन स्टडी ऑन इपिडिमियोलॉजी ऑफ अस्थमा, रेस्पीरेटरी सिम्टम्स ऐण्ड क्रॉनिक ब्रोंकाइटिस* तथा *न्यूट्रीएन्ट रिक्वाइरमेंट्स ऐण्ड रेकमेन्डेड डाइट्री एलाउन्सेस फॉर इण्डियंस*-2010 का अनावरण किया गया । साथ-साथ *इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आई जे एम आर)* के वर्ष 1913 से 2010 तक प्रकाशित लेखों के डिजीटाइजेशन के पश्चात तैयार आर्काइव के एक डी वी डी सेट का भी विमोचन किया गया। परिषद के पूर्व महानिदेशक डॉ एस.पी. त्रिपाठी ने भी अपने संस्मरण प्रस्तुत किए । इस अवसर पर भारत में हरित क्रान्ति के जनक डॉ एम. एस. स्वामीनाथन तथा परिषद के पूर्व महानिदेशक डॉ सी. गोपालन का व्याख्यान भी आयोजित किया गया था ।

स्थापना दिवस व्याख्यान देते हुए डॉ सी. गोपालन

डॉ त्रिपाठी ने आई सी एम आर के साथ सम्पन्न अपने कार्यों एवं अनुभवों के संस्मरण के दौरान स्पष्ट किया कि नौकरी में स्थाइत्व तथा पदोन्नति किसी भी वैज्ञानिक एवं कर्मचारी को आगे बढ़ने एवं और बेहतर कार्य करने में प्रेरणा स्रोत होती है, जिसका शुरू में अभाव था तथा लोग यहां आने में संकोच करते थे, जिसका धीरे-धीरे समाधान किया गया और एक बेहतर वातावरण तैयार किया गया ।

संस्थापना दिवस व्याख्यान के अन्तर्गत डॉ गोपालन ने भारत में पोषण, कुपोषण की स्थिति का वर्णन किया तथा विटामिन 'ए' अल्पता एवं आयोडीन युक्त नमक एवं दोहरे पुष्टीकृत नमक के प्रयोग को बढ़ावा देने पर भी बल दिया । उन्होंने कुन्नूर, आन्ध्र प्रदेश में लार्ड मेककेरिसन के निर्देशन में न्युट्रीशन लेबोरेटरीज की शुरुआत तथा बाद में राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद में उसके परिवर्तित होने और पोषण के क्षेत्र में संस्तुत आहारीय मानों (आर डी ए), पोषक तत्वों के गुणवत्ता मान, क्वाशिओरकर एवं अन्य महत्वपूर्ण पोषण सम्बद्ध पहलुओं पर किए गए शोध कार्यों का वर्णन किया ।

स्थापना दिवस व्याख्यान देते हुए डॉ एम.एस. स्वामीनाथन

डॉ स्वामीनाथन ने अपने व्याख्यान में स्पष्ट किया कि भारत ने किस प्रकार अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप खाद्य निर्भरता प्राप्त की तथा हरित क्रान्ति के फलस्वरूप देश में खाद्यान्नों के उत्पादन में अभूतपूर्व प्रगति हुई है । उन्होंने खाद्यों एवं स्वास्थ्य अनुसंधान की संयुक्त सहभागिता पर भी ध्यान आकर्षित किया । उन्होंने इस बात की भी चर्चा की कि हाल में संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति श्री बरक ओबामा ने अपने भारत भ्रमण के दौरान भारत की 30 वर्ष की आयु से कम युवा आबादी के बढ़े हुए प्रतिशत का उल्लेख किया जो एक प्रभावशील वर्कफोर्स के रूप में कार्य कर सकती है, तथा भारत के लिए वरदान साबित हो सकती है । किन्तु उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इस बात पर भी बल देने की आवश्यकता है कि इसमें से कितने लोग कुपोषण, अल्पपोषण तथा अन्य विकारों से ग्रस्त हैं । अतः, उज्ज्वल भविष्य के लिए स्वास्थ्य एवं खाद्य समस्याओं का साथ-साथ समाधान करना होगा । उन्होंने जलवायु परिवर्तन तथा कृषि उत्पादन पर इसके पड़ने वाले प्रभावों का भी उल्लेख किया । उन्होंने खाद्यों के भण्डारण पर बल देते हुए कहा कि बड़ी मात्रा में अनाज बाहर खुले में पड़ा हुआ नष्ट हो जाता है, जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। डॉ स्वामीनाथन ने सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्यों पर बोलते हुए आशंका व्यक्त की कि वर्तमान प्रगति को देखते हुए वर्ष 2015 तक निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति मुश्किल प्रतीत होती है ।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की संयुक्त सचिव सुश्री शालिनी प्रसाद के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह का समापन हुआ ।

प्रस्तुति : डॉ रजनी कान्त, वैज्ञानिक 'डी' एवं डॉ के.एन. पाण्डेय वैज्ञानिक 'डी', भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय, नई दिल्ली

परिषद की वित्तीय सहायता से संपन्न संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन

संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं पाठ्यक्रम/सम्मेलन	दिनांक एवं स्थान	सम्पर्क के लिए पता
स्वास्थ्य एवं सुखमय जीवन तथा वयोवृद्धि हेतु योगाभ्यास	6-7 दिसम्बर, 2010 सेवाग्राम	**डॉ बी.सी. हरीनाथ** आयोजन अध्यक्ष एवं निदेशक, JBTDR महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान सेवाग्राम - 442 102 (वर्धा)
प्रोफेशनल वॉयस : मूल्यांकन एवं प्रबंधन पर राष्ट्रीय कार्यशाला	9-10 दिसम्बर, 2010 मैसूर	**डॉ एस.आर. सावित्री** आचार्य, वाक् विज्ञान वाक् भाषाविज्ञान विभाग अखिल भारतीय वाक् एवं श्रवण संस्थान मानस गंगोत्री, मैसूर - 570 006
चिकित्सीय व्यवहार में आनुवंशिकी : नैदानिकी से चिकित्सा विज्ञान	12 दिसम्बर, 2010 अहमदाबाद	**डॉ जयेश जे. शेठ** निदेशक FRIGE's इंस्टीट्यूट ऑफ जेनेटिक्स अहमदाबाद - 380 015
भारतीय जैविक रसायनज्ञ संस्था की 79वीं वार्षिक बैठक	13-15 दिसम्बर, 2010 बंगलौर	**प्रो डी.एन. राव** आयोजन सचिव सोसाइटी ऑफ बायोलॉजिकल केमिस्ट्स (इंडिया) भारतीय विज्ञान संस्थान बंगलौर - 560 012
शोध प्रक्रिया और वैज्ञानिक शोध पत्र लेखन पर प्रशिक्षण	15-16 दिसम्बर, 2010 मनीपाल	**डॉ एन. उडुपा** आचार्य एवं प्राचार्य MCOPS, मनीपाल विश्वविद्यालय मनीपाल (कर्नाटक)
स्वास्थ्य आर्थिकी एवं प्रबंधन पर प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार	16-17 दिसम्बर, 2010 तंजावूर	**डॉ ए. अरुलराज** आयोजन सचिव अर्थशास्त्र विभाग, आर एस गवर्नमेंट कॉलेज तंजावूर - 604 505
फसली पादपों के कवकीय रोगों के प्रबंधन पर आण्विक प्रयास	27-30 दिसम्बर, 2010 बंगलौर	**डॉ पी. चौडप्पा** आयोजन सचिव भारतीय उद्यान अनुसंधान संस्थान बंगलौर - 560 089
एशियन बायोफिजिक्स एसोसिएशन (ABA) की 7वीं संगोष्ठी तथा भारतीय बायोफिजिकल संस्था (IBS) की वार्षिक बैठक	30 जनवरी-2 फरवरी, 2011 नई दिल्ली	**प्रो. एन.आर. जगन्नाथन** अध्यक्ष, एन एम आर विभाग अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली - 110 029

संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं पाठ्यक्रम/सम्मेलन	दिनांक एवं स्थान	सम्पर्क के लिए पता
PUCIAPSCON 2011	4-6 फरवरी, 2011 जबलपुर	**डॉ वीकेश अग्रवाल** आयोजन सचिव एवं सह आचार्य एन.एस.सी.बी. मेडिकल कॉलेज जबलपुर - 482 002
चिकित्सीय भेषज बल गतिकी : अवधारणाएं और अनुप्रयोग	4-5 फरवरी, 2011 मनीपाल	**डॉ एम.के. उन्नीकृष्णन** आचार्य एवं अध्यक्ष फार्मेसी प्रैक्टिस विभाग मनीपाल कॉलेज ऑफ फार्मास्युटिकल साइंसेज़ मनीपाल विश्वविद्यालय मनीपाल - 576 104
साउथ एशिया एसोसिएशन ऑफ एलर्जी, अस्थमा ऐण्ड क्लीनिकल इम्यूनोलॉजी पर प्रथम सम्मेलन (SAAAACI-2011)	12-13 फरवरी, 2011 दिल्ली	**डॉ राज कुमार** आचार्य एवं अध्यक्ष श्वसनी प्रत्यूर्जता एवं व्यावहारिक प्रतिरक्षाविज्ञान विभाग वी.पी.वक्ष संस्थान, दिल्ली- 110 007

परिषद के समाचार

कोलकाता स्थित राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्ररोग संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ समीरन पाण्डा ने एसटीआई तथा एचआईवी के प्रोग्राम साइन्स में दि प्लेस ऑफ सेक्स वर्क पर प्राग, चेक रिपब्लिक (गणराज्य) में सम्पन्न बैठक में भाग लिया (1-3 नवम्बर, 2010)।

हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'डी' डॉ के.वी. राधाकृष्ण ने विशेष आहारीय प्रयोग के लिए पोषण एवं खाद्यों पर कोडेक्स समिति के सेंटिआगो, चिली में सम्पन्न 32वें सत्र में भाग लिया (1-5 नवम्बर, 2010)।

चेन्नई स्थित राष्ट्रीय जानपदिकरोगविज्ञानी संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ युवराज जे. तथा वैज्ञानिक 'बी' डॉ पी. मनीक्कम ने स्वास्थ्य जिला प्रबन्ध : प्राथमिकता सेटिंग, योजना तथा कार्यक्रम डिज़ाइन पर इफकारा, तंज़ानिया में सम्पन्न उन्नत पाठ्यक्रम में भाग लिया (1-19 नवम्बर, 2010)।

मुम्बई स्थित आंत्रविषाणु अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक 'सी' डॉ वी.के. सक्सेना ने अम्सटर्डम, दि नीदरलैण्ड में सम्पन्न संक्रामक रोगों की आण्विक रोगजानपदिकी एवं विकासात्मक आनुवंशिकी पर 10वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया (3-5 नवम्बर, 2010)।

हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ टी लोंगवाह ने रोम, इटली में सम्पन्न 'बायोडाइवर्सिटी ऐण्ड सस्टेनेबल डाइट्स' (जैवविविधता एवं टिकाउ आहार) नामक शीर्षक पर अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी में भाग लिया (3-5 नवम्बर, 2010)।

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक 'एफ' डॉ नीना वलेचा तथा वैज्ञानिक 'डी' डॉ अनूप अन्चीकर ने अमेरिकन सोसाइटी ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन ऐण्ड हाइज़ीन (ASTMH) की अटलान्टा, यू एस ए में सम्पन्न वार्षिक बैठक में भाग लिया (3-7 नवम्बर, 2010)।

कोलकाता स्थित राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्ररोग संस्थान के वैज्ञानिक 'डी' डॉ त्रिवेणी कृष्णनन ने सपारो मेडिकल विश्वविद्यालय स्कूल ऑफ मेडिसिन का भ्रमण किया (4-6 नवम्बर, 2010) तथा टोकोशिमा एवं सापोरो जापान में सम्पन्न 58वीं जापानीज़ डोमेस्टीक कांग्रेस ऑफ वाइरोलॉजी में भाग लिया (7-9 नवम्बर, 2010)।

हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'सी' डॉ एस.एस.वाई.एच. कादरी ने ताइवान, तेपेई में सम्पन्न 5वीं AMMRA बैठक के साथ चौथी AFLAS कांग्रेस बैठक तथा 11वीं CSLAS वार्षिक बैठक में भाग लिया (9-11 नवम्बर, 2010)।

पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक 'सी' डॉ आर.एस.ज़ैदी ने पेरिस, फ्रांस में सम्पन्न मीजिल्स एरोमॉल वैक्सीन के लिए डब्ल्यू एच ओ प्रोडेक्ट डेवलपमेन्ट ग्रुप की 11वीं बैठक में भाग लिया (11-12 नवम्बर, 2010)।

पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ ए.सी.मिश्रा ने जेनेवा, स्विटज़रलैण्ड में सम्पन्न (1) चेचक (स्मॉल पॉक्स) प्रयोगशाला नेटवर्क पर डब्ल्यू एच ओ अनौपचारिक बैठक तथा (2) वेरिओला विषाणु अनुसंधान पर डब्ल्यू एच ओ सलाहकार समिति की 12वीं बैठक (17-18 नवम्बर, 2010) में भाग लिया (15-18 नवम्बर, 2010)।

अहमदाबाद स्थित राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान के वैज्ञानिक 'बी' डॉ बी. रविचन्द्रन ने जापान में सम्पन्न पर्यावरण में उत्परिवर्तन तथा उनके स्वास्थ्य प्रभाव पर वैश्विक पहलुओं पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया (16-17 नवम्बर, 2010)।

आई सी एम आर पत्रिका की विषय सूची
वर्ष 24, 2010

प्रमुख लेख	पृष्ठ सं.	माह
1. भारत में गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर की स्थिति	1-8	जनवरी
2. एच आई वी/एड्स की सस्ती दवाइयों की उपलब्धता : भावी चुनौतियां	9-16	फरवरी
3. सड़क यातायात के दौरान घायलों की निगरानी	17-24	मार्च
4. मलेरिया नियंत्रण : प्रगति एवं चुनौतियां	25-32	अप्रैल
5. भारत, चीन और विश्व : एक विज्ञानमितीय विश्लेषण	33-40	मई
6. इंफ्लुएंज़ा ए H1N1(2009) के लिए वैक्सीन	41-48	जून
7. *एनॉ.मिनिमस* रोगवाहक के विशेष संदर्भ में भौगोलिक सूचना प्रणाली द्वारा मच्छरों की उपस्थिति का सटीक सर्वेक्षण	49-56	जुलाई
8. भारत में औषध प्रतिरोधी क्षयरोग का चिकित्सा प्रबन्ध	57-64	अगस्त
9. जापानी मस्तिष्कशोथ के रोगवाहकों का नियंत्रण	65-72	सितम्बर
10. ड्राफ्ट राष्ट्रीय स्वास्थ्य अनुसंधान नीति	73-80	अक्टूबर
11. राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्ररोग संस्थान, कोलकाता	81-88	नवम्बर
12. भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद : गौरवपूर्ण 100 वर्ष	89-96	दिसम्बर

आई सी एम आर पत्रिका भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in पर भी उपलब्ध है

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्

सेमिनार/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए परिषद द्वारा आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, वित्तीय सहायता के लिए निर्धारित प्रपत्र पर पूर्णतया भरे हुए केवल उन्हीं आवेदन पत्रों पर विचार किया जाएगा जो सेमिनार/संगोष्ठी/कार्यशाला आदि के आरम्भ होने की तारीख से कम से कम चार महीने पूर्व भेजे जाएंगे।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स
ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87